http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2024) वर्ष 4, अंक 1, 3-4

Article ID: 345

सरसों की फसल के प्रमुख रोग एवं उनका प्रबंधन

पतिराम[1], विनोद कुमार[2], डॉ. शंकर दयाल भारती[3]

[1]पीएच.डी स्कॉलर, एसकेडी यूनिवर्सिटी, हनुमानगढ़ राजस्थान

[2]पीएच.डी स्कॉलर, दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर

[3]सहायक प्रोफेसर, डीकेएनएमयू, निवाई, राजस्थान

सरसों का रबी की तिलहनी फसली में एक प्रमुख स्थान है, सरसों की खेती सीमित सिंचाई की दशा में भी अधिक लाभदायक फसल है, सरसों की फसल के लिए उन्नत विधियाँ अपनाने से उत्पादन एवं उत्पादकता में बहुत ही वृद्धि होती है।सरसों की अच्छी उपज के लिए समतल एवं अच्छे जल निकास वाली बलुई दोमट से दोमट मिट्टी उपयुक्त रहती है, लेकिन यह लवणीय एवं क्षारीयता से मुक्त हो। क्षारीय भूमि से उपयुक्त किस्मों का चुनाव करके भी इसकी खेती की जा सकती है।

सरसों की फसल में कई तरह के रोग होते हैं। जिनमें पत्ती झुलसा रोग, आल्टरनरिया (Alternaria), तना सड़न रोग, अंगमारी रोग आदि कई रोग शामिल हैं।

कुछ प्रमुख रोग

आर्द्र गलन रोग : इस रोग के प्रकोप से भूमि के अंदर वाले भाग सबसे पहले प्रभावित होते हैं। इसके साथ ही पौधों के तने भी कमजोर हो जाते हैं और पौधा सूख कर गिरने लगता है।

नियंत्रण: इस रोग से बचने के लिए प्रति किलोग्राम बीज को 8 ग्राम ट्राइकोडर्मा पाउडर से उपचारित करें। रोग के लक्षण दिखाई देने पर संक्रमित पौधों को नष्ट कर दें। खड़ी फसल में रोग के लक्षण दिखने पर प्रति एकड़ जमीन में 500 ग्राम मैंकोज़ेब 75 प्रतिशत का छिड़काव करें। खेत में जल जमाव न होने दें।

आल्टरनरिया झुलसा रोग : इस रोग के कारण 70 प्रतिशत तक फसल नष्ट हो सकती है। इस रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियों पर भूरे रंग के धब्बे बनने लगते हैं। रोग बढ़ने पर यह धब्बे तने एवं फलियों पर भी नजर आने लगते हैं। इस रोग को फैलने से रोकने के लिए प्रभावित पौधों को नष्ट कर दें।

नियंत्रण: इस रोग से बचने के लिए मैंकोज़ेब 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें।

सफेद गेरुई रोग : इस रोग से करीब 55 प्रतिशत तक फसल नष्ट हो सकती है। यह रोग फफूंद के कारण होता है। इस रोग के होने पर पत्तियों की निचली सतह पर सफेद या पीले रंग के फफोले बन जाते हैं। पौधों के विकास में भी बाधा आती है।

नियंत्रण: इससे बचने के लिए 0.2 प्रतिशत रिडोमिल का छिड़काव करें।

तना सड़न रोग : इस रोग से सरसों की फसल को सर्वाधिक नुकसान पहुंचता है। इस रोग से प्रभावित पौधों के तने पर धब्बे नजर आने लगते हैं। रोग बढ़ने पर पौधों का तना सड़ जाता है।

नियंत्रण: इस रोग से बचने के लिए खेत में जल जमाव न होने दें। बुवाई के लिए रोग रहित स्वस्थ बीजों का चयन करें। प्रति लीटर पानी में 3 ग्राम कार्बेन्डाज़िम 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी या मैंकोज़ेब 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी मिलाकर छिड़काव करें।

सरसों का अंगमारी रोग: इस रोग से पतियों पर कत्थईभूरे रंग के उभरे हुये धबे दिखाई देते है, जिनके किनारे पीले रंग के होते है। देखने मे यह धबे आँख की तरह प्रतीत होते है। उग्र अवस्था मे यह धबे आपस मे मिलकर बड़े हो जाते है| जिससे पतिया पीली हो कर झड़ने लगती है।

नियंत्रण: बीज को थायरम-75 डब्लू.पी 3 ग्राम या ट्राइकोड्रर्मा पाउडर 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोंपचार करे।100 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद मे 10 किलो ट्राइकोड्रर्मा हरजेनियम मिलाकर 15 दिन तक रखे व बुवाई से पहले खेत मे छिड़ककर हल्की सिंचाई कर दे।